14 मेरी माँ

रामप्रसाद बिस्मिल

(जन्म : 1887 ई., निधन : 1927 ई.)

रामप्रसाद का जन्म शाहजहाँपुर (उत्तरप्रदेश) में एक साधारण परिवार में हुआ था । उनके जन्म के कुछ वर्ष पहले ही उनके पितामह रोजी-रोटी की तलाश में ग्वालियर के अपने गाँव से आकर यहाँ बसे थे । पिता साधारण पढ़े-लिखे थे । कचहरी में सरकारी स्टाम्प बेचकर परिवार का पालन किया तथा बच्चों को शिक्षा दिलाई । उर्दू मिडिल की परीक्षा में दो बार असफल होने पर अंग्रेजी मिडिल की पढ़ाई की । स्वाध्याय से बांग्ला भाषा सीखी । आरंभ में आर्यसमाज की प्रवृत्तियों से जुड़े बाद में क्रांतिकारी संगठन में सक्रिय हुए । 'काकोरी रेल डकैती' कांड का मुख्य अभियुक्त मानकर इन्हें फाँसी की सजा हुई और वे शहीद हो गए ।

आरंभ में 'राम' तथा 'अज्ञात' नाम से पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहे । बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद भी किए । 'आत्मकथा' फाँसी के दो दिन पहले जेल में पूरी करके उन्होंने किसी तरह बाहर भिजवाई । जिसके कुछ अंश श्री गणेशशंकर विद्यार्थी के संपादन में 'काकोरी के शहीद' नाम से छपे ।

माँ केवल जन्म ही नहीं देती, व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है । अपनी आत्मकथा के इन अंशों में प्रसिद्ध क्रांतिकारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' अपने जीवन-निर्माण में अपनी माँ के अवर्णनीय योगदान के प्रति नतमस्तक होते हैं और जन्म-जन्मांतर में उनके ऋण से उऋण होने की कोई संभावना नहीं दिखाई देती ।

लखनऊ कांग्रेस में जाने के लिए मेरी बड़ी इच्छा थी । दादीजी और पिताजी तो विरोध करते रहे, किंतु माताजी ने मुझे खर्च दे ही दिया । उसी समय शाहजहाँपुर में सेवा-समिति का आरंभ हुआ था । मैं बड़े उत्साह के साथ सेवा-समिति में सहयोग देता था । पिताजी और दादीजी को मेरे इस प्रकार के कार्य अच्छे न लगते थे, किंतु माताजी मेरा उत्साह भंग न होने देती थीं, जिसके कारण उन्हें अक्सर पिताजी की डाँट-फटकार तथा दंड सहन करना पड़ता था । वास्तव में, मेरी माताजी देवी है । मुझ में जो कुछ जीवन तथा साहस आया, वह मेरी माताजी तथा गुरूदेव श्री सोमदेव जी की कृपाओं का ही परिणाम है । दादीजी और पिताजी मेरे विवाह के लिए बहुत अनुरोध करते, किंतु माताजी यह कहतीं कि शिक्षा पा चुकने के बाद ही विवाह करना उचित होगा । माताजी के प्रोत्साहन तथा सद्व्यवहार ने मेरे जीवन में वह दृढ़ता उत्पन्न की कि किसी आपत्ति तथा संकट के आने पर भी मैंने अपने संकल्प को न त्यागा ।

एक समय मेरे पिताजी दीवानी मुकदमे में किसी पर दावा करके वकील से कह गए थे कि जो काम हो वह मुझसे करा लें । कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने मुझे बुला भेजा और कहा कि मैं पिताजी के हस्ताक्षर वकालतनामे पर कर दूँ । मैंने तुरंत उत्तर दिया कि यह तो धर्म विरुद्ध होगा, इस प्रकार का पाप मैं कदापि नहीं कर सकता । वकील साहब ने बहुत समझाया कि मुकदमा खारिज हो जाएगा । किंतु मुझ पर कुछ भी प्रभाव न हुआ, न मैंने हस्ताक्षर किए । अपने जीवन में हमेंशा सत्य का आचरण करता था, चाहे कुछ हो जाए, सत्य बात कह देता था ।

ग्यारह वर्ष की उम्र में माताजी विवाह कर शाहजहाँपुर आई थीं । उस समय वह नितांत अशिक्षित एक ग्रामीण कन्या के समान थीं । शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद दादीजी ने अपनी छोटी बहन को बुला लिया । उन्होंने माताजी को गृहकार्य की शिक्षा दी । थोड़े दिनों में माताजी ने घर के सब काम-काज को समझ लिया और भोजनादि का ठीक-ठीक प्रबंध करने लगीं । मेरे जन्म होने के पाँच या सात वर्ष बाद उन्होंने हिन्दी पढ़ना आरंभ किया । पढ़ने का शौक उन्हें खुद ही पैदा हुआ था । मुहल्ले की सखी-सहेली जो घर पर आया करती थीं, उन्हीं में जो शिक्षित थीं, माताजी उनसे अक्षर-बोध करतीं । इस प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता, उसमें पढ़ना-लिखना करतीं । परिश्रम के बल से थोड़े दिनों में ही वह देवनागरी पुस्तकों का अध्ययन करने लगीं । मेरी बहनों को छोटी आयु में माताजी ही शिक्षा दिया करती थीं । जब से मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया, माताजी से खूब वार्तालाप होता । उस समय की अपेक्षा अब उनके विचार भी कुछ उदार हो गए हैं । यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं तो मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार-चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता । शिक्षादि के अतिरिक्त क्रांतिकारी जीवन में भी उन्होंने मेरी वैसी ही सहायता

की है, जैसी मेजिनी को उनकी माता ने की थी । माताजी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राणहानि न हो । उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना । उनके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मजबूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी थी ।

जन्मदात्री जननी ! इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण उतारने का प्रयत्न करने का भी अवसर न मिला । इस जन्म में तो क्या यदि मैं अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो भी तुमसे उऋण नहीं हो सकता । जिस प्रेम तथा दृढ़ता के साथ तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया है, वह अवर्णनीय है । मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने जिस प्रकार अपनी देववाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया है । तुम्हारी दया से ही मैं देशसेवा में संलग्न हो सका । धार्मिक जीवन में भी तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता दी । जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की उसका भी श्रेय तुम्हीं को है । जिस मनोहर रूप से तुम मुझे उपदेश करती थीं, उसका स्मरण कर तुम्हारी मंगलमयी मूर्ति का ध्यान आ जाता है और मस्तक झुक जाता है । तुम्हें यदि मुझे ताड़ना भी देनी हुई, तो बड़े स्नेह से हर बात को समझा दिया । यदि मैंने धृष्टतापूर्ण उत्तर दिया तब तुमने प्रेम भरे शब्दों में यही कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे, वह करो, किंतु ऐसा करना ठीक नहीं, इसका परिणाम अच्छा न होगा । जीवनदात्री ! तुमने इस शरीर को जन्म देकर केवल पालन-पोषण ही नहीं किया बल्कि आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं । जन्म-जन्मांतर परमात्मा ऐसी ही माता दे ।

महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर नहीं होने दिया । सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी को सुनाते हुए मुझे सांत्वना देती रहीं । तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन-भर में कोई कष्ट अनुभव न किया । इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं । केवल एक इच्छा है, वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता । किंतु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती और तुम्हें मेरी मृत्यु की दु:खभरी खबर सुनाई जाएगी । माँ ! मुझे विश्वास है कि तुम यह समझ कर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता - भारत माता की सेवा में अपने जीवन को बलि-देवी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारी कोख कलंकित न की, अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा । जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जाएगा, तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जाएगा । गुरु गोबिंद सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु की खबर सुनी तो बहुत प्रसन्न हुई थीं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई बाँटी थीं । जन्मदात्री ! वर दो कि अंतिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर-त्याग करूँ ।

शब्दार्थ

प्रोत्साहन उत्साह बढ़ाना, हिम्मत बँधाना **सद्‌व्यवहार** अच्छा व्यवहार, अच्छी चाल-चलन **संकल्प** दृढ़ निश्चय **वकालतनामा** अदालत में पैरवी करने का अधिकार पत्र **नितांत** बिलकुल, पूरी तरह **जीवन निर्वाह** जीवन व्यतीत करना, जीवन जीना **मेजिनी** - मेजिनी (1805-1875) का जन्म इटली में हुआ था । वह लोकतंत्र का प्रबल समर्थक, परम देशभक्त, सक्रिय और निर्भीक नेता था । अनेक भागों में बँटे इटली को एक करने में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी । वह ऑस्ट्रियन शासन से इटली को मुक्त कराने के लिए जीवन भर लड़ता रहा **जन्मदात्री** जन्म देने वाली, माता, माँ **अवर्णनीय** जिसका वर्णन न हो सके **धृष्टता** उद्‌दंडता, ढिठाई, दुस्साहस **आत्मिक** आत्मा से संबंधित **जन्म-जन्मांतर** अनेक जन्मों तक **सांत्वना** तसल्ली देना, ढाढ़स बँधाना **धर्म-रक्षार्थ** धर्म की रक्षा के लिए **विचलित** अस्थिर, डिगा हुआ, चंचल

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) बिस्मिल की माताजी का सबसे बड़ा आदेश क्या था ?

(2) बिस्मिल की एक मात्र इच्छा क्या थी ?

(3) बिस्मिल ने वकालत नामे में हस्ताक्षर क्यों नहीं किए ?

(4) बिस्मिल की माताजी के विचार पहले की अपेक्षा अधिक उदार कब हो गए थे ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिस्मिल को अपनी एकमात्र इच्छा क्यों पूरी होती दिखाई नहीं दे रही थी ?

(2) अंतिम समय के लिए बिस्मिल अपनी माँ से क्या वर माँगते हैं ?

(3) गुरु गोबिन्द सिंह की पत्नी ने अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई क्यों बाँटी ?

(4) बिस्मिल की माँ ने शिक्षा प्राप्त करने के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) बिस्मिल की आत्मिक, धार्मिक और सामाजिक उन्नति में उनकी माँ का क्या योगदान रहा ?

(2) बिस्मिल की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ?

(3) आपको बिस्मिल की माता के किन गुणों ने सबसे अधिक प्रभावित किया और क्यों ?

4. निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

विरोध, खर्च, आरंभ, उत्साह, सद्व्यवहार, उत्तर

5. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

माँ, संकट, सत्य, ऋण, परमात्मा

6. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के प्रकार बताइए :

(1) मैं बड़े उत्साह के साथ सेवा समिति में सहयोग देता था ।

(2) अब मैं तुमसे नहीं मिल सकूँगा ।

(3) परमात्मा जन्म-जन्मान्तर ऐसी ही माता दे ।

(4) क्या मैं कभी तुम्हारा कर्ज चुका सकूँगा ।

योग्यता-विस्तार

- 'बच्चे माँ-बाप की विशेष सम्पत्ति हैं ।' इस विषय पर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'अपने जीवन में माता-पिता की भूमिका' विषय पर छात्रों को मौखिक अभिव्यक्ति का अवसर दें ।
- स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने वाले किन्हीं दो क्रांतिकारियों के जीवन-कार्य के बारे में विद्यार्थियों को बतलाएँ ।

●